जनजातीय महिलाओं पर शासकीय योजनाओं के प्रभावों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन बालोद जिला के डॉडी विकास खण्ड के विशेष संदर्भ में

शोधार्थी श्रीमती प्रविण्यलता गायकवाड (समाजशास्त्र)
शोध केन्द्र
शासकीय विश्वनाथ यादव ताम्रस्कर स्वशासी स्नाकोत्तर महाविद्यालय, दुर्ग, छ.ग

सारांश :–

भारत में ब्रिटिश शासन काल में ही जनजातीय समुदायों के जीवन में सामाजिक आर्थिक सुधार लाने की दिशा में कार्यक्रम नियम एवं अनेक नीतियॉ निर्धारित की गई थी तथा स्वाधीनता के पश्चात् सवैंधानिक प्रावधानों एवं पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा इस दिशा में विशेष प्रयास किये गये है।

जनजातियों के विकास के लिये योजनाएं तभी प्रभावशील सिद्ध होंगी जब वे उनकी आवश्यकताओं तथा संस्कृति के प्रति संदेनशील बनाई जाएगी। यह माना गया है कि जनजातियों की मूल संस्कृति की उपेक्षा किये बिना उनके विकास के प्रयास किये जाने चाहिये। विकास का मॉडल उनके परम्परागत जीवन मूल्यों के प्रति विश्वास के आधार पर ही बनाया जा सकता है उनकी संस्कृति व जीवन शैली को उपहास का पात्र बना कर उनको अपमानित नही किया जा सकता। स्वयं जनजातीय समाज भी सजातीय नही है। जनजातियों के लियें कल्याणकारी योजनाऍ उनके जीवन के समग्र तथा सर्वागीण विकास के लिये होनी चाहिये। आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक सभी पहलुओं को दृष्टि में रख कर जनजातीय जीवन को उन्नत बनाना इसका मूल उद्देश्य है।

प्रस्तावना :–

भारत एक विशाल देश है जिसमें अनेक विविधताऍ है। आदि काल से ही यहॉ विभिन्न धर्मो, मतों, प्रजातियों, संस्कृतियों, जातियो और जनजातियों की कर्मभूमि रहा है। इसके पश्चात् भी अपनी मौलिक सांस्कृतिक विशेषताओं को नष्ट नही होने दिया है। दुर्गम क्षेत्रों मे आज भी ऐसे मानव समूह पाये जाते है जो पिछडे सैकडों वर्षो से शेष संसार की सभ्यता से दूर रहकर भी अपनी सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहचान बनाए हुये है। ये मानव समूह घने जंगलों, ऊचें पर्वतों, मरूस्थलों एवं पठारी क्षेत्रों में निवास करते है। जिन्हे संविधान में अनुसूचित जनजाति की संज्ञा दी है।

प्रकृति की सबसे सुन्दर कृति है महिला, सदियों से उसे महिमा मंडित किया गया वह किसी न किसी रूप में मानवता का सृजन करती रही एवं वह सौम्यता, धैर्य व सहनशीलता की मूर्ति बनी रही। धरती जिस तरह पंचतत्वों के असंतुलन से प्रभावित होती है उसी तरह मानवता की जन्मदायिनी भी विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक कारकों के असंतुलन से प्रभावित होती है। परंतु सौजन्य प्रेम, सहिष्णुता एवं साहस की प्रतिमा ने इसे स्वीकार किया, गति के पहिये आगे बढ़ते गये, प्रदेश की आधी आबादी में सामाई इस सृष्टा के प्रति बहुत देर बाद संवेदनशीलता व्यक्त की गई जो सदा दूसरों के प्रति संवेदनशीलता व प्रेरणादायिनी रही है। नारी सदैव से ही भारतीय समाज में एक कमजोर समूह के रूप में जानी जाती है। जनजाति महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिये सरकार द्वारा अनेक योजनाऍ चलाई जा रही है। इसके

बावजूद भी हमारे समाज में उसकी स्थिति शोचनीय है। महिलाओ की स्थिति में सुधार के लिए अनेक संवैधानिक तथा सामाजिक स्तर पर प्रयास किये जा रहे है फिर भी देखा जा रहा है कि जनजाति क्षेत्र में महिलाओं मे प्रति हिंसा, अत्याचार, अपराध, जैसी समस्याएँ सुलझने के बजाय और बढ़ रही है। महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक स्तर में सुधार होने की संभावना है जो उनके विकास एवं सशक्तिकरण के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसी को ध्यान में रखते हुए शोध अध्ययन में जनजातीय महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक स्तर को ज्ञात किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य :–

ग्रामीण परिवेश में महिलाओं की स्थिति काफी दयनीय व विचारणीय है। उन्हे उपभोग की वस्तु समझा जाता है। जनजातीय महिलाओं को घरेलू कार्यो के साथ साथ खेतो में भी काम कर समाज में दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है। प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य है।

1. जनजातीय महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक स्तर को ज्ञात करना।

अध्ययन क्षेत्र :–

शोध हेतु डौंडी नगर पंचायत का चयन किया गया है। वर्तमान में तहसील से प्राप्त सूचना के आधार पर डौंडी को दो भागों में बांटा गया है। डौंडी भाग एक, डौंडी भाग दो। उद्देश्य के आधार पर जनजातीय को देखते हुए डौंडी भाग एक का चयन किया गया है। भाग एक में कुल जनसंख्या 10486 है। जिसमें अनुसूचित जनजातियों की कुल संख्या 5993 है इनमें पुरूष जनजाति की संख्या 2890 है और जनजाति महिलाओं की संख्या 3103 है जिसमें से महिला लाभान्वितों की संख्या 1500 है इनमें से 20% अर्थात 300 महिला उत्तरदाताओं का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है।

प्रविधि एवं उपकरण :–

प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु उपकरण के रूप में साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। प्रविधि के रूप में अवलोकन का प्रयोग किया गया है।

तालिका कमांक 1

उत्तरदाताओं का पड़ोसी से संबंध

कं.	उत्तरदाताओं का पड़ोसी से संबंध	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	अच्छा	99	33
2.	बहुत अच्छा	22	24
3.	सामान्य	129	43
4.	खराब		
5.	बहुत खराब		
	कुल	300	100

उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि 33% उत्तदाताओं का पड़ोसी से संबंध अच्छा है 24% उत्तदाताओं का पड़ोसी से संबंध बहुत अच्छा है एवं 43% उत्तदाताओं का पड़ोसी से संबंध सामान्य है

तालिका कमांक 2

उत्तरदाताओं की आजीविका के मुख्य साधनों का वर्गीकरण

कं.	उत्तरदाताओं की आजीविका के साधन	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	बास के वस्तु बनाना	30	10
2.	मजदूरी	57	19
3.	कृषि	202	67.35
4.	वनोपज संग्रहण	11	3.67
5.	नौकरी		
	कुल	300	100

तालिका कमांक 2 से यह ज्ञात होता है कि उत्तरदाताओं के जीवन यापन के मुख्य साधनों के वर्गीकरण के अध्ययन में 67.35% उत्तदाताओं कृषि कार्यो को अपने आजीविका के मुख्य साधन के रूप में लिया है जो सबसे अधिक है राज्य का प्रमुख कार्य कृषि ही है इसलिये कृषि सर्वाधिक उत्तरदाताओं के आजीविका का मुख्य साधन है। 19% उत्तदाताओं के द्वारा आजीविका हेतु मजदूरी का कार्य करते है। 10% उत्तदाताओं ने आजीविका के मुख्य साधन के लिये बांस के वस्तु बनाते है। बांस से बनाये गये वस्तुओ का उपयोग और बांस के द्वारा बनायी जाने वाली वस्तुओं के विकास के लिए शासन के द्वारा कोई ठोस प्रयास न किये जाने के कारण वर्तमान में इसकी उपयोगिता और मांग कम हो रही है जिससे बांस के शिल्पकार अपने जीवन यापन के लिये दूसरे कार्यो को अपना रहे है। वनोपज संग्रहण का कार्य करने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 3.67 है। उत्तरदाताओं के अनुसार वनोपज संग्रहण में आय कम और कार्य अधिक होने के कारण सबसे कम उत्तरदाता वनोपज को अपनी जीवन यापन के लिये इस कार्य को करते है। और नौकरी पेशे वाले उत्तरदाताओं की प्रतिशत 0 है इसका प्रमुख कारण अशिक्षा और अज्ञानता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि उत्तरदाताओं की आजीविका के मुख्य आधार कृषि है।

तालिका कमांक 3

उत्तरदाताओं के शिक्षा का स्तर

कं.	उत्तरदाताओं के शिक्षा का स्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	निरक्षर	164	54.07
2.	प्राथमिक / मिडिल	134	44.07
3.	हाई. / हायर सेकण्डरी	02	.06
4.	स्नातक / स्नातकोत्तर		
5.	अन्य		
	कुल	300	100

तालिका कमांक 3 से ज्ञात हुआ कि 54.07% उत्तदाता निरक्षर, 44.07 % उत्तदाता प्राथमिक / मिडिल स्तर के तथा .06 % उत्तदाता हाई. / हायर सेकण्डरी के उत्तरदाता पाया गया। तथा स्नातक / स्नाकोत्तर व अन्य में 0% उत्तदाता प्राप्त हुये। अतः तालिका के ज्ञात करने से पता चलता है कि उत्तरदाताओं में शिक्षा के प्रति अरूचि या शिक्षा की सही जानकारी का अभाव है। कृषि कार्य में सलंग्न होने के कारण जनजाति उत्तरदाताओं में शिक्षा का स्तर स्नातक / स्नातकोत्तर तक पहुॅच पाना असंमभव है।

निष्कर्ष :–

जनजाति महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक स्तर को ज्ञात करने से ज्ञात हुआ कि डौंडी नगर ग्रामीण इलाके से लगा हुआ विकासखण्ड है। जहॉ उत्तरदाताओं में अपने आस पड़ोस के लोगो से मानवीय संबंध होते है किन्तु पहले जो माहौल लोगो के बीच या सामाजिक क्रिया–कलाप में होते थे उनमें परिवर्तन देखने को मिला। जनजातियों की आजीविका का मुख्य साधन पहले जंगल से कंद मूल, पत्तों का संग्रहण, शिकार करना होता था लेकिन आज के आधुनिक दौर में थोडी परिवर्तन हुई है जिससे उसके आजीविका का साधन के रूप में अधिकतर उत्तरदाता कृषि कार्य में सलंग्न है। उत्तरदाताओं के शिक्षा स्तर से ज्ञात हुआ कि 54.07% उत्तदाता निरक्षर पाया गया जो समाज के प्रति निराश, अरूचि दिखाई दी। जो जनजातीयों के लिये बीमारी से कम नही है। अतः जनजातियों को आधुनिक दौर के साथ आगे बढ़ने के लिए उनकी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व शैक्षिक स्तर में सुधार लाने की जरूरत है जो सर्वागीण विकास में सहायक सिद्ध हो सकते है।

संदर्भ सूची :–

यादव पूरन मल 2008 आदिवासी समाज और आधुनिकता

आहूजा राम 2000 भारतीय समाज

बघेल डॉ डी.एस. 2000 जनजातीय समाज का समाजशास्त्र

उप्रेती डॉ हरिशचन्द्र भारत में जनजातीय विकास कार्यक्रम

हुसैन नदीन 2000 जनजातीय भारत